IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

रीतिकालीन प्रमुख नीतिपरक कवि : एक अध्ययन

Dr. Chandrakant Mishra
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, Madhya Pradesh, India

Abstract: हिन्दी साहित्य के रीतिकाल में नीतिकाव्य भी एक प्रमुख प्रवृत्ति है, इस काल की नीति विषयक पुच्छल तारे की भाँति अचानक टूट कर नहीं आयीं, संस्कृत काव्यों से इनकी एक परंपरा प्रवाहित हो रही है। भुर्तहरि ने नीतिशतक 650 नामक से संस्कृत भाषा में काव्यों में इनकी एक परम्परा प्रवाहित हो रही है। भर्तुहरि ने नीतिशतक 650 नाम से संस्कृत भाषा में नीतिकाव्य की रचना की थी। हेमचंद्र के अप्रभंश व्याकरण में अनेक दोहे नीति से संबद्ध है, कबीर, तुलसी, रही, जमाल आदि कवियों में भी नीति विषयक रचनाएँ दोहाछंद में है। रीतिकाल में नीति विषयक काव्यों के रचयिताओं में वृंद, गिरधर, कविराय, बैलाल, सम्मन, रामसहाय, दीनदयाल गिरि आदि के नाम विशेषता उल्लेखनीय है।

Keywords: रीतिकालीन कवि, नीतिपरक, नीतिकाव्य, परम्परा, आदि।

संदर्भ स्रोतः

1. गिरिधर कविराय का नीति संसार, पृ. 1
2. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी नीतिकाव्य, पृ. 27
3. गिरिधर कविराय का नीति संसार, पृ. 18
4. किशोरीलाल गुप्त, गिरिधर कविराय ग्रंथावली पृ. 3
5. किशोरीलाल गुप्त, गिरिधर कविराय ग्रंथावली पृ. 64
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.367–368
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र सह सम्पादक हरदयाल, पृ.
9. केशव की रामचद्रिक, पृ. 55
10. केशव की रामचद्रिक